वो कौन थी?

तत्व TWILIGHT SERIES

जिनशासन में BOTH PASS	महोत्सव या मोहोत्सव	मुझे तेरे जनम का मिलना रे..	अमृतवेल	The Way of Legal Murder	सुपात्रदान

अर्हं नमः

મુમુક્ષુની ભોગની દુનિયાનું વર્ણન વધારે છે આમાં!
કારણ કે લોકો તો જ સમજી શકશે કે
આવા ભોગી પણ આજે યોગી બનવા નીકળ્યા છે.
તો ચોક્કસ ભોગ નકામા હશે જ,
યોગ મહાન હશે જ.

એમના સંસારીપણાના પંદરેક ફોટાઓ પણ છે.
હું તો જોઈ ન શકું, પણ બીજા જોનારાઓ સ્તબ્ધ થઈ ગયા. આ વ્યક્તિ દીક્ષા લે છે? અસંભવિત!

બોયકટ વાળ!
જિન્સ-ટીશર્ટ, એ પણ છોકરાઓ જેવા!
ગોગલ્સ પણ છોકરાઓ જેવા!
રોયલ બાઈક છોકરાઓની!
સ્ટાઈલ પણ છોકરાની!
આને છોકરી માને કોણ?
અને આજે?

:

अर्हं नमः

છેલ્લે જાણવા મળેલી વાતો:

(1) સાઈકલની રેસમાં આ બહેન પ્રથમ આવ્યા. સાઈકલ એવી Fast ચલાવી કે આગળનું ટાયર જ નીકળી ગયેલું. ઘણું વાગેલું પણ ખરું.. પણ ઘરે કશું જણાવ્યું નહિ. સાઈકલ રીપેર કરાવી દીધી, ઘરે કહી દીધું 'રમતા રમતા પડી ગયેલી, એટલે વાગ્યું.'

(2) લગ્ન બાદ સાસરામાં પહેલું એક વર્ષ એમને ઘણી જ તકલીફ પડી. સાસરીયા તો સારા હતા, પણ 'મને દીક્ષા ક્યારે મળશે?' એની તીવ્ર ભાવનામાં એ હેરાન થઈ જતા, છેવટે ક્યારેક ક્યારેક રોટલી શેકવાની ગરમ તવી પર પોતાના હાથ લગાડી દેતા, એને બાળવા દેતા, એ રીતે પોતાની જાતને નુકસાન પહોંચાડતા. પછી ખ્યાલ આવ્યો કે 'આ બધું કરવું ઉચિત નથી.'

(3) આખી જીંદગીમાં કોઈપણ લગ્નપ્રસંગમાં એકપણ વાર એમણે ખાધું નથી. ખુદ પોતાના લગ્નપ્રસંગમાં પણ નહિ. પોતાના ઘરે કુલ ત્રણ વાર લગ્નપ્રસંગો આવ્યા, દરેક વખતે આમ જ કર્યું 'ભોજન-બહિષ્કાર!'

(4) આટલું જ નહિ, આ બાજુ લગ્નપ્રસંગો ચાલે, અને આ બહેન ત્યાંથી ભાગી જાય, આજુબાજુમાં નજીકમાં જે કોઈપણ ગામમાં સાધુ-સાધ્વી હોય, ત્યાં ભેટવા-મળવા પહોંચી જાય. જ્યારે પાછા આવે, બધા પુછે ત્યારે કોઈ ને કોઈ બહાના બતાવી દે. [લગ્નો રાજસ્થાનમાં થતા.]

(5) પૈસા તો પોતાની પાસે ન હોય, પણ લગ્નપ્રસંગે મળેલા ચાંદીના સિક્કા વગેરે આપી દે Auto ડ્રાઈવરને, ટેક્ષી-ડ્રાઈવરને.

આ હતો એમનો સુંદર ઈતિહાસ!

આંસુ ટપકી પડે આંખોમાંથી ...

એવી મર્યાદા !

એવો વૈરાગ્ય !

એવું તેજ !

એવું સમર્પણ !

એવો ભક્તિભાવ !

ઈચ્છા તો હતી કે પંદર ફોટા પણ આ જ પુસ્તકમાં છપાવું. પણ લોકોને કદાચ ઉચિત ન લાગે.
ફોટા છપાવવાની ભાવના પાછળનું કારણ પણ એ જ કે નવી પેઢી એ જોઈને જ વિચારે ચડશે કે
'આ મુમુક્ષુ તો અમારા કરતા પણ વધારે મોજશોખવાળા હતા. આજે એ જે સંયમ લે છે, તો અમે પણ લઈ શકશું ને?'

નવી પેઢી માટે એ ફોટા અત્યંત ઉપયોગી છે.
છતાં પુસ્તકમાં છાપતો નથી.
નવી પેઢીની છોકરીઓ જે જોવા માંગે, તો નીચે સંપર્ક કરશો.

જયણાબહેન: 9384656405

મેં ઘણું ઓછું લખ્યું છે આમાં !

ઘણું વધારે કરીને વાંચજે ...

યુગપ્રધાનાચાર્યસમ પૂજ્યપાદ
ગુરુદેવશ્રી ચન્દ્રશેખરવિજયજીનો
શિષ્ય ગુણહંસ

दिव्य आशीर्वाद

सच्चारित्र चुडामणि, कर्म साहित्य निष्णात, सिद्धांतमहोदधि
पू.आ. श्री प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. एवं उन के विनेय
युगप्रधानाचार्यसम शासन प्रभावक गुरुदेव
प.पू.श्री चन्द्रशेखर विजयजी म.सा.

* विश्रादाता *

सिद्धांतदिवाकर गच्छाधिपति आ.श्री जयघोषसूरीश्वरजी म.सा.
सरलस्वभावी प.पू.आ.श्री हंसकीर्तिसूरीश्वरजी म.सा.

लेखक

मुनिराज श्री गुणहंसविजयजी म.सा.

Copies 1,000

* प्रकाशक *

कमल प्रकाशन ट्रस्ट
102-ए, चन्दनबाला कोम्पलेक्स, आनंद नगर,
पोस्ट ऑफिस के सामने, मक्ता, पालडी, अहमदाबाद - 7.

* प्राप्ति स्थल *

नरेश जैन
373, Mint Street, Rajendra Complex,
(Near Mahashakthi Hotel)
Chennai - 600 079. Ph: 9841067888

मनोज जैन
Shree Adinath Enterprises
7, Perumal Mudali Street, Sowcrapet,
Chennai - 600 079. Ph: 9840398344

Design and Printed by:

Divyam

Ph : 044-49580318 9884232891/8148836497

अर्हं नमः

वो कौन थी?

(1)''देखो भाई ! मेरी तो तीव्र भावना दीक्षा लेने की ही है। ये तो परिवार वाले मानते नही है, इसलिए उनकी जबरदस्ती के कारण आपके साथ ये मीटिंग करने के लिये आयी हूँ। परन्तु मैं आपको कह देती हूँ कि आप ही मना कर देना, क्योंकि मेरे साथ शादी करके आपकी ही जिंदगी बिगडेंगी। मैं आपको बिल्कुल भी सुख नहि दे सकती, मुझे इन्टरेस्ट ही नहीं है।''

शादी करने की पहली मीटिंग में ही लडकी के मुँख से स्पष्ट शब्दो में ऐसी बातें सुनकर युवक स्तब्ध रह गया। और उसने पीछे से जवाब भिजवा दिया कि 'मुझे लडकी पसंद नही है।'

(2)''देखो भाई ! मैं दूसरे सब लोगो को सच्ची बात नही बता सकती, परन्तु आपको तो बता देती हूँ। मैं आपके साथ माया-कपट नहीं करना चाहती। मैं एक दूसरे लडके को बहुत प्यार करती हूँ। उसके साथ मैंने कोर्ट-मेरेज कर ली है। मैं उसको नही छोड सकती। ये तो परिवार की जीद के कारण आपके साथ मीटिंग में बैठी हूँ। मैं अपने परिवार को बता नही सकती, लेकिन आप मुझे हेल्प करो। आप तो नये जमाने के हो ना ? इसलिए आपको ये बात जल्दी समज में आ जायेंगी- झश्रशशीश!''

जहाँ लडकी को ऐसा लगा कि सामने वाला लडका धार्मिक है, मेरी दीक्षा की बात सुनकर तो, वह मुझे ही पसंद करेगा, वहाँ उस लडकीने नया बहाना बनाया Love का।

दीक्षा की तीव्र भावना से प्रेरित वो बहन असत्य बोलती रही और उसमें उसको जरा भी संकोच नहीं हुआ। ''धम्मे माया नो माया...'' ये हकीकत वो पचा चूकी थी।

बेचारा युवक ! अध्यात्म क्षेत्रमें मस्त रहने वाली लडकी की भाषा में छुपे हुए गूढ रहस्यों को वो समझ नही सका, घबरा गया।'ऐसी लंडे वाली लडकी के साथ मैं क्युं शादी करूं ?' और आखिर उसने भी जवाब भेज दिया कि 'लडकी पसंद नहीं है।'

दक्षिण भारत में चित्रदुर्गा की रहनेवाली यह बहन !

जहाँ साधु-साध्वीओंका आना-जाना बहुत कम....

जहाँ धार्मिक माहोल भी बहुत कम..... इसलिए वैराग्य और दीक्षा का माहोल तो दूर की बात....

इसलिए ही जहाँ इस बहन को 18 साल की उम्र तक बिल्कुल इन्टरेस्ट नही था जैन धर्म में। जन्म से जैन होते हुए भी, कर्म से और विचारो से परिपक्व जैन बने नहि थे।

वहाँ इस ब्रह्म को दीक्षा के भाव अचानक कैसे आये ? और उसके बाद भी परिवार के साथ लडने की, नये-नये युवको के सामने घबराये बिना नयी-नयी स्टोरी उत्पन्न करके, अपने आपको खराब दिखाकर उनको भगा देने की हिंमत कैसे आयी?

सुनिये उस बहन के शब्दो में उसका जवाब ....

(1) मैं साईन्स की स्टुडंट थी। एकबार आलू-कांदे में

कितने जीव खदबद करते है, देखने का, चैक करने का एक प्रोजेक्ट हमको करना था। मैंने सुना था कि 'उसमें अनंत जीव होते है ऐसा जैनधर्म कहता है।' परंन्तु आज तक इस बात का विश्वास नही हुआ था। आज पहली बार माईक्रोस्कोप द्वारा आलू-कांदे के छोटे टुकडे देखे, और मेरी आँखे खुली की खुली रह गयी।

छोटे-बडे हजारो की संख्या में जीव उसके अंदर घलते फिरते स्पष्ट दिखाई दिये। (उस बहन ने जो जीव देखे, वो तो त्रसजीव थे। अनंतजीव तो स्थावर के है और वो जीव तो घलते-फिरते हुए दिखते नही, परन्तु उन त्रसजीवों को देखकर उनकी अनंत जीवों वाली बात के उपर श्रद्धा बढ गयी।

बस, उस दिन से जैनधर्म के प्रति मेरा बहु'न आसमान पर पहुँच गया, क्योंकि जैन धर्ममें जो बात हजारो साल पहले बताई गई थी, वो ही बात आज सायन्स कर रहा था।

(2) पू. सा काव्यरत्नाश्री म.से मेरा परिचय हुआ। उनके सत्संग-संपर्क द्वारा भी मेरी धर्मभावना वृढ बनी। (अगर साधु-साध्वीजी एक तरह से अच्छे आचार पालने वाले हो, अच्छे स्वभाव वाले हो, शिष्य बनाने की लालसा वाले न हो, अच्छी तरह से अभ्यास-हिताशिक्षा आदि देने वाले हो तो उसका प्रभाव कितना अप्रतिम होता है। ये बात इस बहन के जीवनसे पता घलती है।)

(3) मुझे विरतिदूत का लेखन मिला। ये मेगेझीन पढ·

पढकर मेरा वैराग्य वृद्ध बना। (अच्छी पुस्तके, अच्छे मेगेझीन कितने असरकारक होते है ये इस बात से समझ सकते है।)

फिर ? क्यां हुआ ?

क्यां उस बहन के परिवार वाले मान गये ? दीक्षा हो गई ?

नहीं ! उसकी कठीन परीक्षा बाकी थी।

उसके पिताजी को ब्रेन-हेमरेज हो गया, और उसके परिवार को मौका मिल गया।

''पापा को बडी मुश्कील से थोडा ठीक हुआ है, परन्तु अब तू अगर ऐसे नाटक करेगी ना, तो पापा का टेशन बढ जायेगा, और उसमे पापा को कुछ हो गया ना, तो सारी जिम्मेदारी तेरी....'' परिवार वालों ने बहन को सच्ची धमकी दे दी।

पापा की बिमारी की बात तो सच्ची ही थी।

आखिर बहन को झुकना पडा।

बेंगलोर के एक लडके के साथ हुई मिटिंग.....

बहन ने सब कुछ सच-सच बता दिया।

''शादी करने के लिए तैयार तो हुई हूँ, परन्तु मुझे इसमें कोई इन्टरेस्ट नही है।

परिवार वालों का फोर्स, पप्पा की बिमारी इन सब कारणों से तैयार हुई हूँ, परन्तु आप सोच समझ कर निर्णय लेना क्योंकि मैं सिद्धाचल में दादा अदिनाथ के पास ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा ले चूकी हूँ। इसलिए मैं आपको संसार का सुख दे नही सकती।''

वो लडका था खानदानी ! समझदार !

उसने विचार किया होंगा कि *'ऐसी लडकी ही मेरी पत्नी बनने के लायक है। बात हैं ब्रह्मचर्य की। वो तो शादी के बाद धीरे-धीरे उसको समजा दूंगा। ऐसी तो कितनी प्रतिज्ञा, कितने सारे लोग लेते ही है, परन्तु जोश में आकर प्रतिज्ञा ले लेने के बाद सच्ची समज आ जाने पर प्रतिज्ञा छोड भी देते है और उसका प्रायश्चित भी ले लेते है।'*

ऐसे व्रतभंग के अनेक दृष्टांतो ने उस लडके को मजबूत बना दिया। लडके ने हाँ कह दी, 'लडकी पसंद है।'

मुमुक्षु बहन ने ज्यादा स्पष्टता की,

''आप बराबर सोच समझ कर निर्णय लेना। मैं प्रतिज्ञा तो तोडूंगी ही नही, आपको संसार सुख नही ही दे सकूंगी, फिर बाद में आप मेरी भूल 'त निकालना।''

युवक ने कहा ''तेरी ईच्छा के विरुद्ध कुछ भी नही होगा।''

इस जवाब में बहुत ज्यादा रहस्य समाया हुआ था।

एक, तो आश्वासन....

दूसरा, युवक के मन की भावना.... 'मैं लडकी की इच्छा ही बदल दूँगा, फिर क्या प्रोब्लेम ?'

और

चित्रदुर्गा की उस मुमुक्षु लडकी के साथ बैंगलोर के वर राजाने शादी कर ली और अपने घर लेकर आ गया।

फिर ? फिर क्यां हुआ ? तो क्यां उस बहनने बादमें प्रतिज्ञा तोड दी? या पालन की ? फिर उस बहन की दीक्षा तो नही ही हुई होंगी ना ?

अरे, भाई ! जल्दबाजी मत करो ।

सुनो तो जरा....

ऐसे भयानक काल में भी कैसी-कैसी उत्तमोत्तम आत्मा हमको देखने को मिलती है ? ये सब सुनो तो सही।

शादी हो जाने के बाद भी उसने दीक्षा की भावना नही छोडी, पति ने ब्रह्मचर्य का पालन करने में सहायता की। सुनिये तो सही उस बहन के शब्द !

'एक ही पलंग पर साथ में सोते, फिर भी संपूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन किया। प्रथम एक वर्ष तो रात को बहुत रोती रहती, 'प्रभु ! में कहाँ फस गयी ? मुझे बचाओ, मुझे उगारो।' एक वर्ष के बाद रोना तो कम हो गया, परन्तु भावना तो बिल्कुल कम नही हुई।

मेरे ससुराल के लोग बहुत अच्छे थे, खानदानी परिवार था। परन्तु मुझे तो संयम ही लेना था, दूसरा कुछ भी नही।

पूरे दिन घर में कुछ काम रहता, इसलिए धर्म करने की अनुकूलता कम मिलती, फिर भी अपने वैराग्य को बढाने के लिये, टीकाने के लिये बहुत सी बातें एकदम पकड के रखी थी।

(1)पू.आ.भ. श्री यशोविजयसूरिजी म.सा.की पुस्तके+

पू. गुणहंस वि.म.की संयम- लक्षी पुस्तकें.. इन सबका सतत पठन करती थी।

(2) पू. यशोविजयसूरिजी (भक्तियोगाचार्य) की एक भी वाचना मैनें छोडी नही। वर्ष के दो-चार-छ बार जहाँ भी वाचना हो, वहाँ तब पहुँच ही जाती। घर से पति तो हाँ कह देते थे, परन्तु परिवार में तो हरबार असत्य ही बोलना पडता। कभी सहेली की शादी का बहाना, कभी किसी की बिमारी का बहाना। ऐसा करते करते सभी शिबिर-वाचना मैनें सुनी। उससे मेरी आत्मा का वैराग्य लोह की तरह अडग बन गया। पूज्य आचार्य देव मेरे लिये सर्वस्व है, भगवान है, सब कुछ है।

(3) हर महिने मेरे पास विरतिदूत मेगेझीन आती। जिस दिन विरतिदूत आती, उस दिन घर का सब काम निपटाने के बाद, रात को पढना चालू करती। और रात को दो-तीन बार जितने भी घण्टे लगे, उसे पढने के बाद ही मैं सोती। कभी तो सुबह के चार-पाँच बजे तक विरतिदूत को पढा है। मुझे उससे भी अच्छा बल प्राप्त हुआ था।

(4) परमात्मा की भक्ति तो मेरा सुंदर आलंबन था ही।

(5) मैने Fruits, Dry Fruits, Green Vegetables संपूण छोड दिये थे।

(6) सुबह नास्ते में खाखरा+चटनी दो वस्तु ही लेती। दूध-चाय-गरम नास्ता आदि कुछ भी नही।

(7) दोपहर खाने में रोटी+चटनी (सूखी चटनी) दो वस्तु

ही लेती। सब्जी-दाल-चावल आदि कुछ भी नही।

(8) शाम को भी ये दो वस्तु रोटी+चटनी।

(9) फरसाण-मिठाई सब कुछ छोड दिया।

(10) हम ब्रह्मचर्य का पालन कर रहे है, ये तो सिर्फ हम दोनों को ही पता था। हमने परिवार वालो को बताया नहीं था, इसीलिए ही थोडे सालो के बाद तो परिवार वाले Force करने लगे कि 'संतान नही हो रही है, तो डोक्टर को दिखाकर आओ।'

परिवार वालों के संतोष के लिये हम डोक्टर को दिखाने के लिये भी निकलते। दो-चार मंदिर के दर्शन करके आ जाते और फिर घर आकर डोक्टरका हमने सोचकर रखा हुआ कोई न कोई जवाब दे देते।

(11) पति की इच्छा तो संसार की थी, परन्तु मेरी मक्कमता के कारण आखिर उन्होंने मुझे मेरी इच्छानुसार हेल्प की।

(12) दीक्षा लेने के लिये मैने अपने पति को बहुत समझाया। अगर उनको भाव आ जाये, तो हम दोनो साथ में दीक्षा ले सकते है, परन्तु ये मुमकीन नही हुआ। दीक्षा लेने के लिये उनकी स्पष्ट ना ही थी।

(13) शुरूआत में मैने जिद्द भी की थी, परन्तु बाद में शांति से काम लिया। उनके साथ का सभी व्यवहार बराबर संभाला।

दस वर्ष निकल गये इस तरह .....

मेरा शरीर रहा संसार में।

मेरा मन रहा संयम में।

एक पल के लिये भी संसार का राग मेरे मन में नही जगा, सचमुच!

पियर जाती, तब वहाँ की जिद्द के कारण कभी केले वगेरे कुछ खाने पडे, परन्तु ऐसे दिन दस वर्ष में 100 भी नही।

दस वर्ष के बाद एकबार पूज्य आचार्य देव के कहने पर मैनें पति से वापस बात की,

''चलो, ले लेते है संयम !हम दोनो । क्यां रखा है इस असार संसार में।''

वे बोले ''तुझे लेना है तो ले ले, मैं नही लेनेवाला।''

थोडे-से मजाक में थोडी-सी उपेक्षा में बोले गये वो शब्द मैने पकड लिये। उनको समझाया ''तो फिर मुझे जाने दो । आपकी जिंदगी आप नये सिरे से जी सकोंगे और मुझे भी मेरी मन पसंद जिंदगी मिल जाऐंगी, यहाँ तो हम दोनो दुःखी है।''

अंत में वो मान गये।

दस वर्षोंके बाद मेरा भाग्योदय हुआ।

मेरे उपकारी पति वापस शादी कर सके, उसके लिए मेरे हाथ तलाक होना जरूरी था और ये काम सिर्फ पन्द्रह दिनों में ही हो गया।

मेरे आनंद का कोई पार ही नही रहा।

कोई भी झगडे के बिना तलाक, अतिशय खुशी के साथ तलाक, ये भी एक आश्चर्य ही होगा।

मैं पहूँच गयी अपनी गुरुमाता पू. आचार्य देव के चरणों में।

मेरी दीक्षा की तालिम शरू हो गयी।

सिर्फ पाँच महिनों में ही गुरुमाँ ने मुझे हा कह दिया, ''बेटा ! तुं दीक्षा के लिये लायक है।''

और आखिर मेरी दीक्षा की जय बोली गयी।

महा सुद पांचम, फरवरी-10 ई.स. 2019 के दिन मेरी दीक्षा होगी। पालिताणा में पू.आ. देव मेरी गुरुमाता भक्तियोगाचार्यजी के वरद हस्ते मुझे रजोहरण मिलेंगा। दस मुमुक्षु आत्माओं की सामूहिक दीक्षा है।

* * *

''आपका व्यवहारिक अभ्यास कितना ?'' चेन्नई आराधना भवन शाहुकार पेठ में मागसर सुद त्रीज के दिन दोपहर तीन बजे वंदन करने के लिये आये हुये उस बहन को मैने प्रश्न पूछा।

''कम्प्युटर साईन्स में अंतिम वर्ष तक मैनें अभ्यास किया है।'' उन्होने कहा कि ''साहेबजी ! अंतिम परीक्षा में कुछ भी इन्टरेस्ट नहि था फिर भी घरवालों के कारण परीक्षा दी थी। शुरुआत में उत्तरपत्र में पूरा प्रश्नपत्र उतार लिया और फिर ''श्री

शंखेश्वर! शरणं मम'' इस मंत्र से पूरा उत्तरपत्र भर कर घर वापस आ गयी।

घर आकर सबको बता दिया था कि ''इस प्रकार किया है, इसलिए मैं फेल होने वाली हूँ। 000 मार्कस आऐंगे।''

परन्तु रीझल्ट आया..... आश्चर्य 76% !

घरवाले कहने लगे कि ''तुने हमको झुठ कहा ना।''

मैंने कहा ''नही ! आप मेरा उत्तरपत्र Re-check करवाओ, खुलवाओ, तो पता चल जाऐंगा कि मैंने ये ये लिखा है।''

परिवार वाले कहने लगे कि ''Pass हो गई ना, बहुत है। क्यों पेपर खुलवायें ?''

'ऐसा कैसे हुआ ?पता नहीं ? उत्तरपत्र चेक करने वाले ऐसी गंभीर भूल करते हैं ?'

''बहन !आपने कौन से साध्वीजी को अपना गुरु बनाया है?'' मैनें दूसरा प्रश्न पूछा ।

''पू.सा. समर्पणरतिश्रीजी को! मूल वाव के है, जगदीशभाई पंडितजी के पास अभ्यास किया है। अहमदाबाद में उनकी दीक्षा पाँच-छ वर्ष पहले हुई थी'', बहन ने कहा ।

''आपका उनके साथ परिचय कैसे हुआ ?''

''प्रभुने करवाया।''

''यानि ?''

''एकबार मंदिर में अष्टोतरी का कार्यक्रम था । मैं वहाँ पर ही बैठी थी। मुझे गुरू तो मिले ही नही थे और मुझे दीक्षा लेनी हो तो साध्वीजी गुरू तो चाहिये ही ना? उस समय मैं प्रभु से प्रार्थना कर रही थी। वही मुझे पीछे से वर्धमान शक्रस्तव का मधुर आवाज सुनाई दिया। मैं मंदिर मे प्रभु के सिवाय किसी के भी सामने नजर करती नही, परन्तु आवाज में ऐसा एक अद्‌भूत आकर्षण था कि मैने स्पेश्यल प्रभु से आज्ञा मांगी कि ''मुझे ये बोलने वाले के दर्शन करने दें।''

और मैने नजर घुमायी।

सौम्य मुखाकृति.....

आँखे बंध.....

शांत स्वर.....

अद्‌भूत भाव मुँख पर उभरे हुये...

और सबसे महत्व का आँखो में आंसु !

मैं देखती ही रही, देखती ही रही, देखती ही रही ।

''ये ही मेरे गुरू, ये ही मेरे गुरू,'' मेरा अंतर पुकार करने लगा। परन्तु जिनका नाम भी नही जानती, जिनसे कोई परिचय नही, उनको कैसे अचानक गुरू बना दूं। बाद में कोई मुश्कील होगी तो ?

और मैने प्रभु को ही सारी जवाबदारी सोंप दी।

''देखो प्रभु ! मुझे तो इस साध्वीजी को मेरा गुरू बनाना है।

अगर ये मेरी आत्मा का कल्याण करने वाले हो, तो 12.00 बजे तक दो वस्तु एक साथ घटनी चाहिये। आप की प्रतिमा के उपर लेफ्ट साईड पैर पर तीन फूल है। उसमे से बीच वाला फूल सरक कर नीचे गिरना चाहिए और उसी समय राईट साईड का घंट बजना चाहिये। अगर ऐसा हुआ तो आपकी संमति मान कर मैं इस साध्वीजी को गुरू बनाउंगी, वरना नहीं।'' मैने संकल्प कर लिया।

दस बजे थे उस समय.....

भावना भाते भाते मैं वही बैठी रही.....

10.30, 11.00, 11.30, 11.58 हुए .....

मैं हारने लगी। मैने मान लिया कि 'प्रभु मुझे मना कर रहे है, इन साध्वीजी को गुरू बनाने की.....'

'जैसी आपकी मरजी' विचार करके मैने मस्तक झुकाया। जैसे ही मस्तक उपर किया, एक महान आश्चर्य का सर्जन हुआ। तीन फूल में से बराबर एकदम बीचवाला फूल सरक कर नीचे गिर गया और उसी समय राईट साईड का घण्ट भी बजा और घडी में बराबर 12.00 बजे थे।

मेरा अंतर आनंद जोरदार आँसु बनकर बहार निकलने लगा।

''क्यां दे दिया प्रभु ! तूने मुझे ? हम जितना प्रेम आपसे करते है, उससे कई ज्यादा प्रेम आप हमसे करते है। मेरी ईच्छा आपने पूरी कर ही ली, भले ही दो घंटे मुझे राह देखनी पडी। धीरज खोने लगी, तब ही आपने फल दिया और सच ही है ना, तो

ही उस वस्तु की किंमत समज में आती है। आसानी से मिली हुई वस्तु की किंमत किसे समझ आती है ?'' मैं प्रभु का उपकार मानकर रोती रही रोती ही रही।

जब मन भर के रो लिया, संतोष हुआ तब उठकर सीधी दौड कर गयी पू. आचार्यदेव के पास। मेरी सब बातें सुनकर उन्होने सहर्ष मुझे संमति दी। और इस प्रकार पू.सा. समर्पणरति श्री जी मेरे गुरु के तौर पर नक्की हुए।

***

ये बहन मुझे सबसे पहले राजेन्द्र भवन चेन्नई में मिले थे। वो मुझे वंदन करने आये थे 'विरतिदूत के लेखक के तौर पर मुझे उपकारी मानकर.....' तब उन्हे दीक्षा की अनुमति मिली नही थी।

उसके थोडे समय बाद अप्रैल 8 तारीख, ई.स. 2018 रविवार को चेन्नई में ही गुजरातीवाडी में सुबह 9.00 बजे वंदन करने आये। उसी दिन मुमुक्षु नेहा-निधि बेंगाणी का वर्षीदान का वरघोडा था। तब इन्होने खुशी के समाचार दिये कि, ''दीक्षा की अनुमति मिल गयी है, तालीम लेने जा रही हूँ।''

तब इनका थोडा-बहुत भूतकाल जानने को मिला था।

अभी Dec.8 तारीख को जब हम नेल्लुर चौमासा पूर्ण करके वापस-चेन्नई बिन्नी मिल्स पधारे, तब इनके भाणेज के साथ वंदन करने आये। उस वक्त वेषभूषा, आभूषण आदि से अंदाज तो आ ही गया था। और इन्होने समाचार भी दिया की ''साहेबजी

!साहेबजी! मेरी दीक्षा नक्की हो गई है। **फरवरी-10 पालिताणा, महासुद पंचमी (वसंतपंचमी) ई.स. 2019.....**"

उनकी खुशी का कोई पार नहीं था।

तब इन्होने विनंति की। ''9 तारीख को मेरे जीजाजी के परिवार की तरफ से राजेन्द्रभवन, शाहुकार पेठ में वरघोडा है, तो उसमें पधारेंगे ? मैने चित्रदूर्गा से ही कह दिया कि आपकी निश्रा में ही कार्यक्रम रखें, परंतु परिवार वाले कहने लगे की वो साहेब बहुत कडक है, उनकी निश्रा हुई तो आठ से ज्यादा आईटम बनाने नही देंगे, अजैन बैन्ड नही चलाएगे। इसलिए उनकी निश्रा नहीं चलेगी।' इसलिए मैने विशेष आग्रह नही किया और अब दूसरे महात्मा की निश्रामें कार्यक्रम है।

मैने बहन को जवाब दिया कि ''मेरे से नही आया जाएगा। वैसे भी दूसरे महात्मा की निश्रा है ही, और मेरे नियम अनुसार नही है।इसलिये मैं नही आउँगा।'' (ये नियम क्यों बनाया उसकी चर्चा यहाँ नही करता।)

परंतु रविवार ता.9 को मैं आराधना भवन पहुँचा था और 11 बजे उनके परिवार वाले विनंति करने आए,

''साहेबजी प्लीझ पधारो। जिन महात्माओं की निश्रामें कार्यक्रम है, वे कोई दूसरे फंकशन में गये हुये है और वहाँ से वापस आने वाले थे, लेकिन वहाँ ही उनको देर हो गयी है। इसलिए वे आये नही अभी तक और वरघोडा उपाश्रय पहुँच गया है, साधु के बिना प्रोग्राम कैसे चलेगा।''

और, उनकी परिस्थिति समझ कर मैं तुरंत वहाँ पहूँचा। मैनें ऐसा विचार नही किया कि 'उन्होने मेरे दो नियमों का पालन ही नही किया, और इसलिए उन्होने मेरी निश्रा भी नही ली।' मेरे लिए इस समय उनकी समाधि ही मुख्य थी।

परन्तु आश्चर्य तो देखों। मुमुक्षु बहन बाद में दोपहर को वंदन करने के लिये आये, तथा उन्होने मुझे बताया की, ''साहेबजी ! मैने आज मूलनायक श्री वासुपूज्यस्वामी दादा को बहुत ज्यादा भाव से प्रार्थना की थी, कि 'आज किसी भी तरह मुझे मेरे उपकारी के दर्शन कराओ, उनकी निश्रा मेरे बहुमान कार्यक्रम में दो मिनिट के लिये भी मिल जाये, तो मैं आपका बहुत उपकार मानूंगी।'

और साहेबजी ! मेरी प्रार्थना सफल हुई, आपको रथ के आगे जाते हुए देखा, और मेरी आँखो में से आँसुओं की धार टपकने लगी। प्रभु हमारी भावनाओं का कितना ध्यान रखते है। प्रभु को सच्चे मन से की हुई एक-एक प्रार्थना सफल होती ही है। आपका गुरूपूजन, आपका लगभग 10 मिनिट का मांगलिक प्रवचन सुनने का मौका भी मुझे मिला।''

***

इस बहन के पास मैने बाद में इनके जीवन का भूतकाल मंगवाया, जिससे उनके जीवन में परिवर्तन कैसे आया ? इसका ख्याल आये।

उन्होने छह पेज भर कर अपना भूतकाल लिखकर भेजा। ये

सब यहाँ उनकी भाषा में ही लिख रहा हूँ। जहाँ उनकी भाषा अस्पष्ट है, वहाँ थोडा ज्यादा स्पष्ट करने के लिये मेरी भाषा का प्रयोग करूंगा।

हमारे परिवार में मेरी चार बहने थी। मैं सबसे छोटी पांचवे नंबर की । जब मेरा जन्म हुआ था, तब शुरूआत में तो परिवार वालो को कोई खुशी नही हुई थी। सभी को लडके की इच्छा थी। चार बहनो को एक भाई तो चाहिए ही था और माँ-बाप को भी चाहिए था एक बेटा। इसलिए सब दुःखी हो गये।

परन्तु मेरा पुण्य जबरदस्त था। थोडे समय में ही मैं सबकी लाडली बन गई। मैं लडकी होते हुए भी, मेरा लालन-पालन लडके की तरह हुआ। और मैं भी उसी प्रकार ही यानि लडका बनकर जीयी।

बहुत ज्यादा प्यार के कारण मैं बचपन से ही बहुत मस्तीखोर और नटखट थी।कुछ ज्यादा ही मस्ती करती।

जब मैं 7th Class में थी, तब श्री केसरसूरिजी समुदाय के साध्वीजी पू.सा. काव्यरत्नाश्रीजी म.सा.के पास मेरी कजीन बहेन म.अरिष्टरत्नाश्रीजी म. के पास एक महिना रही थी। उस समय दीक्षा के भाव तो नही हुए, परन्तु मनमें इतना तो जरूर तय हो गया कि, *'मुझे शादी तो करनी ही नही है। मेरे बहन म. की तरह मैं गुरुकुलवास में रहूंगी।'*

साध्वीजी म.ने मम्मी-पप्पा को कहा भी था कि, ''पांचवी बेटी हमको वहोरा दो, एक बेटी तो शासन को सोंप दो।''

मम्मी का जवाब था कि, ''10th Class पास हो जाने दो फिर देखेंगे।''

स्कूल में खेल-कूद में डूब गयी मैं। बास्केट बोल, मार्च पास्ट (हिन्दी में आजादी के दिन जिस प्रकार मार्च करते है ना, वो) ऐट्लेटिक्स और N.C.C. इन सब में लगभग 1st नंबर ही लाती। इसलिए ही धर्म की रूचि कम हो गई, परन्तु खत्म नही हुई थी। मेरा खाना-पीना मोस्ट ओफ दो ही आईटम, मिठाईयाँ और फ्रुट। एक कीलो मिठाई खाने की प्रतियोगिता में मैं 1st आयी थी।

आ' खाना हो तो दिन में 5-6-7 आ' खा लेती।

जब चोकलेट खाती तब दिन में 50-55 चोकलेट खा जाती।

ऐसे तो कई बार मैनें किया।

15 से 19वर्ष की उम्र तक मैने इस प्रकार जलसा ही किया है।

कार, टु-व्हीलर मैने चलाये हैं।

मैं जीन्स-टीशर्ट पहनकर ही घूमती ।

मेरे बाल ? मुझे बोय कट बाल का ही शौख था ।

लडके के साथ बाईक रेस में मैं भाग लेती और हमेशा First & N.C.C. में Rifle Shooting में भी मेरा नंबर 1st ही था। मैं एक्सपर्ट निशानेबाज बन चूकी थी।

क्रिकेट भी क्यो छोड दूं ? उसमे भी First.....

मुझे कही भी दूसरा-तीसरा नंबर पसंद नही था।

मुझे Air-Craft में ऐरोप्लेन-जेट चलाने का Chance मिला था। फोर्म भी भर दिया था, पायलट बन सकुं ऐसी सब अनुकूलताएँ भी मिल गयी थी। ये सब N.C.C. के कारण मुझे खुला मेदान मिला।

परंतु भगवान ने पप्पा के स्वरूप में मुझे बचा लिया। उन्होने मुझे मना कर दिया और ऐप्लीकेशन के दो टुकडे कर दिये।

फिर कोलेज में मैने साईन्स लिया था । Botany, Zoology, Computer Science (BZC) में मैं जुड गई। मुझे झाड-ऐनीमल ये सब पहले से ही बहुत पसंद था। परन्तु मुझे CS नही पसंद था, तो भी पप्पा के फोर्स के कारण ये भी करना पडा ।

साईन्स पढते-पढते भी अपने स्वभाव अनुसार मैं हँसती-खेलती रहती, मस्ती में रहती। मैं कभी भी सीरीयस बन ही नही सकती थी। गंभीर बन ही नही सकती थी। हसो-हसाओ, खेलो-कूदो ये मेरे शोक।

घरमें कभी भी रात्रिभोजन, कंदमूल नहीं खाया। मम्मी-पप्पा कभी भी खाने नही देते थे, परन्तु कभी-कभी उनसे छिपकर सामनेवाले के घर जाकर काँदा खा लेती थी।

कोलेज के दूसरे वर्ष में प्राणियों को चीरने-फाडने का काम भी किया था।

Leech, Plaun, Shark, Cockroach, Frog वगेरे भी चीरे-फाडे थे।

कोलेज के समय कभी कभी पूजा तो दूर, मंदिर भी नही जाती थी। जैसे भगवान को मूर्ख बनाना हो, वैसे सुबह उठकर प्रभु को याद करके Good Morning बोल देती और रात को सोते समय Good Night बोल देती। बस इससे भगवान खुश हो जाऐंगे ऐसा में मन ही मन संतोष मान लेती थी।

कोलेज में तीसरे वर्ष के प्रेक्टीकल में Botany में Plant Disect + Research था। काकडी, कांदा, आलू की स्लाईज पर प्रेक्टीकल करना था। माईक्रोस्कोप से देखना था कि ''इसमे कितने जीव है ?''

वैसे तो मम्मीने एक दो-बार म.सा.को कम्प्लेन भी की थी कि, ''इसने साईन्स लिया है, तब से मंदिर जाना भी बंद कर दिया है, कांदा भी खाने लगी है।''

साध्वीजी भी मुझे समझाते, परंतु मैं उनके साथ भी कुतर्क करती, चर्चा करती, उनकी बात नही मानती।

परन्तु मैने जब 3rd Year में प्रेक्टीकल में अनुभव किया कि कांदे और आलू के एक सूई के अग्रभाग जितनी जगह में ढेर-के ढेर जीव खदबद कर रहे है, एक दूसरे से टकरा रहे, तो ये सब देखकर मेरे होंश ही उड गये।

मुझे विश्वास ही नही आया कि इतने ज्यादा जीव हो सकते है, इसलिए मैने दूसरा टूकडा लेकर उसे चेक किया। तो उसमें भी ऐसा ही दिखाई दिया।

काँप गयी मैं । अपनी तुच्छ दलीलो के लिये मुझे धिक्कार आया। साध्वीजी को तो चूप कर दिया था मैने, परन्तु अब अपने अंतर की आवाज को चूप कर नही सकी मैं, क्योंकि स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

और वहाँ के वहाँ ही मैने आजीवन कंदमूल त्याग की प्रतिज्ञा परमात्मा की साक्षी में ले ली।

फिर तो मुझे सबसे ज्यादा पसंद काकडी भी छोड दी मैने। अरे, उसके बाद तो तमाम फल और तमाम हरी सब्जीयाँ मुझे छोडनी नही पडी, वो सब अपने आप ही छूट गई।

च्वींगम खाने का भी बहुत शौक था। सुबह कोलेज जाती उस वक्त से खाना चालु.... Center Fresh, बुमर.... वगेरे। परन्तु एकबार डिस्कवरी चैनल में देखा कि कितनी सारी मछलियों का कच्चरघाण होने पर ये च्वींगम बनती है। मशीन में PIG को काटने में आता है, छोटे-छोटे टुकडे.....

बस, ये सब देखने के बाद तो च्वींगम भी छूट गयी।

सुबह से शाम तक चोकलेट, च्वींगम, फ्रुट और मिठाईयाँ खाने वाली मेरी जिन्दगी पर प्रभुने कृपा की वर्षा की। सब अपने आप ही छूट गया ।

बस, फिर तो प्रभु के वचनों में श्रद्धा बढती ही गयी।

जीव-विचार बहुत डीप से पढती गई और उसमे मेरी श्रद्धा भी जबरदस्त होने से, मेरे जीवन में ये सब उतारती गयी।

उसके बाद प्राणियों को कट करने के सारे प्रेक्टीकल मैने छोड दिये। और कई बार कोलेज से भागकर भी मैने जीव-विचार पढा।

फाईनल Exam आयी, परन्तु मुझे फेल होने का कोई डर नही था, क्योंकि मुझे प्रभु के मार्ग पर ही जाना था। मन में दृढ़ निश्चय कर लिया था, इसलिए फेल होने की कोई चिंता नही थी। परन्तु पता नही कैसे ? मैं परीक्षा में पास हो ही जाती थी।

मैं कुछ भी नही करती थी, प्रेक्टीकल परीक्षा में काट-कूप के सभी साधन हाथ में लेती, कुछ करने का नाटक भी करती, परन्तु कुछ भी करती ही नही थी, फिर भी Pass।

अंतिम Theory Exam में पहले पेज पर नवकार मंत्र लिखा, फिर पूरा प्रश्न पेपर लिखा, फिर अगले पेज पर **'श्री शंखेश्वर शरणं मम'** लिखा, फिर अंत मे जीव-विचार की 51 गाथा लिखी। फिर घर जाकर मम्मी को कह दिया कि, ''मैं फैल होने वाली हूँ, मुझे ब्लेम मत करना।''

रीझल्ट आया तब हम राजस्थान में थे। मुझे तो पता ही था के मैं फैल होने वाली हूँ, परन्तु आश्चर्य का सर्जन हुआ, मैं पास हो गई।

फिर एक दो म.सा. का संयोग हुआ, कुछपरिचय बढा। परंतु उनकी खींचासीची देखकर मैं घबरा गई।

''तुं मेरी चेली बन, तुं मेरी चेली बन'', और आखिर मैंने साध्वीजी से सम्पर्क करना छोड दिया। (हम साधु-साध्वीजीओं

को यह बात समझनी बहुत जरूरी है। ऐसे तो सेकडो मुमुक्षुओं के भाव हमारे स्वार्थ के निमित्त से टूट भी गए होंगे।)

· साधु-साध्वीजीओं को वंदन करना भी छोड दिया।

एक बार मम्मीने पूज्य आचार्य श्री जयानंदसूरिजी के आचार पालन की बातें की। सुनकर मुझे बहुत आनंद हुआ। राजस्थान में एक बार दोपहर को मैं भोजन कर रही थी, तभी पूज्य आचार्यजी गोचरी वहोरने के लिये आये। (तब तो वे मुनि ही थे और शिष्य परिवार भी छोटा था।) अभी तक मैने भोजन करना चालू नही किया था, इसलिए मेरी थाली में से सब्जी और मम्मी की थाली में से रोटी वहोरी।

उस दिन से मुझे उनके प्रति अति सद्भाव बढ गया। फिर तो उनको बहुत बार वंदन करने गई, परन्तु वे तो देखते भी नही, बात भी करते नही। तब मैने सोचा कि 'उनके जैसा बनना है।'

फिर उसी समय पू.पं. चन्द्रशेखर विजयजी म.सा.की संयमदूत-विरतिदूत मेगेझीन हाथ में आयी। मैने उसे पढना चालू किया। फिर तो सब मित्र, स्वजन धीरे धीरे छुटते गये।19 वर्ष की उम्र में शत्रुंजय पर दादा आदिनाथ के पास ब्रह्मचर्य व्रत की प्रतिज्ञा ले ली थी। वो प्रभु मेरे Best Friend बन गये थे।

फिर मिठाई की, तली हुई वस्तु की, आम की, पापड की, सचित वस्तु के त्याग की प्रतिज्ञा ले ली। उबला हुआ गर्म पानी पीना शुरू कर दिया।

मैं प्रभु को रोज कहती ।

"Love You very much,..... Always and For Ever I Will Be Loving you ! Keep Loving me Always.'

मुझे शादी करनी नही थी, करुँगी तो सिर्फ आपके साथ प्रभु ये थी मेरी प्रार्थना !

परन्तु मेरी शादी की बात घरमें चालू हो गई ।

मैने बहाने बनाये, असत्य बोला, माया करके सभी को समझाया, परन्तु कर्म को नमः.... मेरी सगाई 24 वर्ष की उम्र में हो गयी।

मैने श्रावक को भी विनंति की, कि 'Please आप मना कर दो, मेरा पुण्य कम है। कोई भी मेरी बात समझता ही नही, आप तो समझो।''

ऐसे समय में ही मेरे पापा को Brain का अकस्मात हुआ। उनकी स्मृति चली गई। फिर तो सभी घरवाले मेरे उपर टूट पडे कि, ''अगर पप्पा को कुछ भी हुआ तो सब जवाबदारी तेरी। फिर तूं पूरी जिन्दगी पश्चाताप करेंगी, तेरे कारण पप्पाकी मौत हो गयी तो।''

शादी के दिन हस्तमिलाप की क्रिया के समय,

शादी की पहली रात्री के समय,

माला के फंकशन के समय,

हर एक समय मैने श्रावक को समझाया कि, ''आप ही मना

कर दो शादी करने की।'' परन्तु मेरे कर्म बहुत ही भारी थे।

शादी हो गयी। मैं रोज रोती रहती और अपने आप को समझाती कि 'आर्तध्यान नहि करना,' परन्तु मन मानता ही नही था।

इस दुःख से बहार आने के लिये मैने अपना हाथ भी जलाया। अपने उपर ही कुछ कर लेती।

श्रावक घर आये उससे पहले सो जाती....

उनके साथ काम जितनी ही बात, भोजन पिरसना बस !

मम्मी को जब ये सब बात पता चली, तब उन्होने मुझे मयणा-श्रीपाल, अंजना-पवनकुमार वगेरे की Story सुनाई। मेरी पत्नी के तौर पर फर्ज क्या है? समझाया। फिर धीरे धीरे श्रावक के साथ अच्छा व्यवहार चालू किया।

मेरे लिये श्रावक ने रात्रि-भोजन का त्याग, कंदमूल का त्याग, मंदिर दर्शन करने का नियम लिया। एक बार मैनें उनको कहे बिना ही छह विगईयों की प्रतिज्ञा ले ली, उसके बाद उन्होने प्रभु पूजा शुरू की। फिर तो वे इतने मक्कम बन गये कि दोपहर के 12 बज जाये, तो भी पूजा करने तो जाते ही।

एक बार बीच में पालीताणा जाने का हुआ और फिर मन बहुत भर जाने से में वापस ससुराल नहीं गई। एक वर्ष पियर में और तीर्थोमें बीताया। बहुत सारे आचार्य भगवन्तो के पास गयी, उनकी सलाह ली। लगभग सभी का एक ही जवाब होता, ''पति को किसी भी तरह समझाओं।''

हा ! इन सब समय के दरम्यान मैं हर महिने विरतिदूत अवश्य पढती। पू. चन्द्रशेखर म.सा. को मैंने देखा नही था, परन्तु उनके प्रति संपूर्ण सद्भाव तो प्रकट हो ही गया था और इसलिए जिस दिन मुझे पता चला कि पू. चन्द्रशेखर म.सा. का कालधर्म हो गया है, उस दिन अनायास ही मेरी आँखो से आँसु टपक पडे थे।

पूज्य आचार्य भगवंत की सलाह लेकर में वापस ससुराल आयी। पति के साथ अच्छा व्यवहार चालू ही रखा, परन्तु ब्रह्मचर्य का पालन तो पूरी मजबूताई के साथ करती।

इन सब दिनों के दोरान मेरे Best कल्याण मित्र मेरी मम्मी की मृत्यु हो गई। मुझे बहुत आघात लगा। मै वापस अंदर से एकदम तूट गयी। में अकेली पड गयी। उस वक्त कोई भी पुस्तक का वांचन भी मुझे असर करता नही था।

परन्तु प्रभु का परम उपकार कि ऐसे वक्त में उन्होने मेरी एक नये कल्याण मित्र से भेट करवा दी 'भरतभाई'। उन्होने मुझे समझाया कि ''व्यक्ति का राग नहि रखना, गुणों का राग रखना।''

और पू.भक्तियोगाचार्य श्री यशोविजयसूरिजी के मौन साधना शिबिर में जाना चालु किया। वहाँ मेरा मन स्थिर होने लगा। ससुराल में धर्म तो था ही, परन्तु दीक्षा की छूट नही थी।

शादी के बाद मैने ब्रश करना छोड दिया।

शादी के बाद साबुन लगाना छोड दिया।

शादी के बाद परफ्युम लगाना भी छोड दिया।

शादी के बाद एक साडी 7 से 9 दिनों तक पहनती।

शादी के बाद मैने कभी भी मेरे लिये नयी साडी खरीदी नही। कभी-कभी मेरी बहनें मेरे लिये नयी साडी खरीद कर लाती, तो वो पहन लेती। मेरी Choice मैनें छोड दी थी।

शादी के बाद चप्पल भी छोड दिये।

पति के साथ बहार घूमने फिरने जाती, तो मैं कुछ भी बहार का खाती-पीती नही थी। कुछ भी खरीदी नही करती थी। सिर्फ खेलती, Long Drive करती, सीटी बजाती, चीख लगाती।

श्रावक के साथ काश्मीर-कन्याकुमारी घुमकर आयी। बस पिछले वर्ष दुआँ (धानेरा के बाजु में छोटा सा गाँव) में मुझे मेरे गुरूमैया पू.सा. समर्पणरतिश्रीजी से भेट हुई।

फिर तो पू. आचार्यदेव के मार्गदर्शन अनुसार आगे बढती गयी और रास्ता खुलता गया। श्रावक की, ससुराल पक्ष की, पियर पक्षकी सभी की हाँ आ गयी और श्रावक के साथ सिर्फ 15 दिनों में ही तलाक हो गया। उनकी दूसरी शादी भी हो गयी और इस तरफ मेरी तालीम भी विधि अनुसार चालू हो गयी।

पूरे ससुराल पक्ष को लाख लाख धन्यवाद।

धन धन्नो अणगार, यशोदा, मिरेकल, महाव्रतों वगेरे पुस्तकों की भी मेरे उपर गाढी असर हुई।

पूज्य गुरु भगवन्त मेरे जीवन में पधारे और मेरा जीवन बन

गया बाग-बगीचा। अब उसमें चारित्र नामक फूल खिलने की तैयारी में है।

मेरा आदर्श ये है कि,

गुरुकी इच्छा, वो ही मेरी इच्छा.....

गुरुकी भावना, वो ही मेरी भावना.....

बुद्धि, अहंकार, कर्तृत्व का विसर्जन वो ही मेरी दीक्षा.....

इन सब की श्मसान यात्रा वो ही मेरी दीक्षा.....

समर्पण भाव की रथयात्रा, वो ही मेरी दीक्षा.....

***

उनके शब्दों में उनके भूतकाल से लगाकर वर्तमान तक का वर्णन पूरा हुआ। उनकी भविष्य की भावनाओं को भी देख लिया।

फरवरी तारीख 10,2019, महासुद पांचम के दिन उनकी दीक्षा पालीताणा में सामूहिक 10 दीक्षाओं में है। पू.आ. भक्तियोगाचार्य यशोविजयसूरिजी के हाथों से इनको रजोहरण मिलेगा।

आपके सामने एक छोटा सा प्रश्न.....

वो कौन थी ? वो कौन है ? वो कौन बनेगी ?

Keep on Guessing.....

***

श्रीमती मोहीनीदेवी जसवंतराजजी पटियात

गुरु माँ

सद्गुरु

Miracle

यशोदा

अहोवीर

दक्षिण भारत

चेन्नई के चमकते तितारे

एक छोटा सा- ब्रेक